६ - इतना दुःख क्यो?

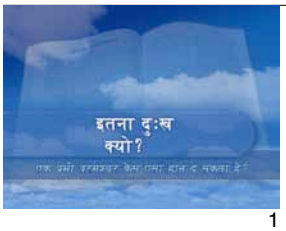

1

एक प्रेमी परमेश्वर कैसे ऐसा होने दे सकता है?

६ - इतना दुःख क्यो?

६ - इतना दुःख क्यो?

2

क्लारा एडंरसन नाम की एक नौकरानी सैंनफ्रान्सिसको में रहती थी। क्लारा एक अत्यन्त आदर्श और सदाचारी महिला थी।

पन्द्रह साल तक एक ही स्वामी की सेवा करने के बाद एक दिन क्लारा गायब हो गई।

उसके स्वामी को इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी कि वह कहाँ चली गई।

बहुत समय तक उसे किसी ने नहीं देखा।

तब अचानक, बहुत दिनों तक ढूढंने के बाद, उस शहर के समाज सेवा विभाग ने उसे ढूंढ लिया।

क्लारा सैंनफ्रान्सिसको के बाहर एक पहाड़ पर भूख के कारण मरणावस्था में छिपी हुई पाई गई। उसने कहा, "मैं मरना चाहती हूँ। मुझे अकेला छोड़ दो।" जब एक पत्रकार ने, जिसने अन्त में उसे ढूंढ लिया था उससे प्रश्न किये तो क्लारा ने कहा, "देखो कोई भी मेरी परवाह नहीं करता। मैं केवल एक नौकरानी हूँ -- इस समाज में हज़ारों में से केवल एक तुच्छ कार्यकर्ता हूँ। मेरे जीवन का कोई मूल्य नहीं है। मेरा कोई नज़दीकी रिश्तेदार नहीं है, कोई परिवार नहीं है, कोई मित्र नहीं है।

मैं इतनी अकेली हूँ कि मैं जीना नहीं चाहती। ऐसा

६ - इतना दुःख क्यो?

कोई नहीं है जिसे मैं अपना जान सकूं -- कोई भी नहीं है जिसके सामने मैं अपना हृदय खोल सकूं। इसलिए मुझे बस मर जाने दो, क्योंकि वास्तव में मेरी परवाह करनेवाला कोई नहीं है।"

3

"कोई परवाह नहीं करता! " एक सूनसान ग्रह पर पुरुषों और स्त्रियों की यह निराशाजनक पुकार है।

हाल ही में परमेश्वर के संबंध में एक निरीक्षण के दौरान, लोगों से यह पूछा गया, "यदि आप परमेश्वर से एक प्रश्न पूछ सकते, तो वह प्रश्न क्या होता?"

और आप? आप परमेश्वर से क्या पूछना चाहेंगे?

लाखों लोग यह पूछेंगे: "परमेश्वर, क्या तू वास्तव में मेरी देखभाल करता है? यदि तू बहुत अच्छा है तो इतनी अधिक बीमारियाँ, दुख और मृत्यु हमारे संसार में क्यों है?"

"क्यों इतनी अधिक हृदय की पीड़ा और दुख है?"

"अकाल, बाढ़ें, प्राकृतिक विपदा, और युद्ध क्यों है।"

4

जब हम अपने चारो ओर देखते हैं तब मालूम होता है कि इस संसार में एक शैतानी शक्ति है। चारों ओर हर दिन भयानक शोकपूर्ण घटनाएँ हो रही हैं।

६ - इतना दुःख क्यो?

5

(दृश्य)

इस संसार में इन सब शोकपूर्ण घटनाओं, दुःख, और पीड़ा का जिम्मेदार कौन है?

बहुत से लोग परमेश्वर को इन मुसीबतों के लिए दोषी ठहराते हैं।

कितनी बार आप उन्हें यह प्रश्न पूछते हुए सुनते हैं कि, "परमेश्वर ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?"

6

आइए हम देखते हैं कि बाईबिल इस अच्छाई और बुराई के बीच हो रहे महान युद्ध के विषय में क्या कहती है। आप पूछ सकते है: "यदि परमेश्वर इन समस्त दुःखों और तकलीफों को इस संसार में नहीं लाया, तो वास्तव में इन दुःखों के लिए कौन जिम्मेदार है?"

7

बाइबिल दोषी शक्ति की ओर इशारा करती है! यीशु ने एक किसान की कहानी बताई जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोए, परन्तु जब वे पौधे उगे,

8

तो वहाँ उस खेत में जंगली दाने के पौधे भी दिखाई दिए।

६ - इतना दुःख क्यो?

9

(मूलपाठ : मत्ती १३ : २७)

"इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उस से कहा, हे स्वामी, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था?

10

फिर जंगली दाने के पौधे उस में कहाँ से आए?"

वे यह जानना चाहते थे कि,"वे जंगली दाने के पौधे कहाँ से आए?"

11

(मूलपाठ : मत्ती १३ : ३७ - ३९)

"उसने उनको उत्तर दिया, कि अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है।"

12

खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं।"

13

"जिस बैरी ने उनको बोया वह शैतान है।"

मत्ती १३:३७ - ३९

14

आप देखते हैं कि जब परमेश्वर प्रत्येक को प्रेम और दया दिखाने का प्रयत्न करता है, तो उसी समय इस दुनिया में एक दूसरी शक्ति परमेश्वर के बच्चों के जीवन में आपत्ति, दुःख, मृत्यु और बीमारियाँ लाती है।

६ - इतना दुःख क्यो?

15

बाईबिल की अंतिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य हमें यह बतलाती है कि इन सब का आरम्भ कैसे हुआ जिससे स्वर्ग में क्या हुआ था हम सच्चाई को जान सके जिसके कारण पृथ्वी पर इतनी अधिक दुख और पीड़ा आई। हम इस बुराई के मूल की खोज करेंगे। यह जानकर आप को आश्चर्य होगा परन्तु स्वर्ग में एक बार लड़ाई हुई थी!

16

(मूलपाठ : प्रकाशित-वाक्य १:७-९)

"फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

17

परन्तु वे प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिए फिर जगह न रही।

18

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और संसार का भरमाने वाला है;

19

वह पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।"

प्रकाशितवाक्य १२:७-९

६ - इतना दुःख क्यो?

20

अब, ध्यान दीजिए कि शैतान या इब्लीस का प्रकाशितवाक्य १२:३,४ में किस प्रकार परिचय दिया गया है।

21

(मूलपाठः प्रकाशित-वाक्य १:३,४)
"और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई दिया, और देखो; एक बड़ा लाल अजगर था जिसके सात सिर और दस सींग थे,

22

और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे।

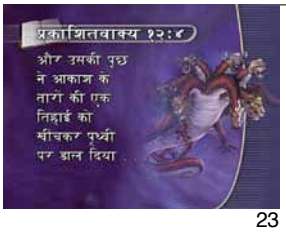

23

"और उसकी पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया---"

24

प्रत्यक्ष रूप से स्वर्ग के एक-तिहाई स्वर्गदूतों ने बहकाने वाले का अनुसरण किया जिसने परमेश्वर के विरुद्ध राजद्रोह किया था।

परन्तु अब हम लूसीफर नामक गिराए गए स्वर्गदूत के विषय में और अधिक खोज करेंगे। पुराने नियम में उसका सोर के राजा के रूप में वर्णन किया गया है, और उसके बारे में यह कहा गया है,

६ - इतना दुःख क्यो?

25

(मूलपाठ : यहेजकेल २८:१२-१४)

"....परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तू तो उतम से भी उतम है; तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है।

यहेजकेल २८:१२

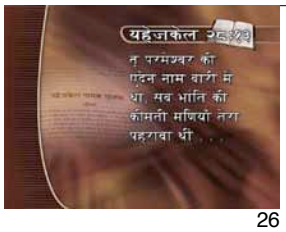

26

तू परमेश्वर की एदेन नाम बारी में था, सब भांति की कीमती मणियाँ तेरा पहरावा थीं--

यहेजकेल २८:१३

27

तू छानेवाला अभिषिक्त करूब था, ...तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था ;

28

तू आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच चलता फिरता था"

यहेजकेल २८:१४

29

लूसीफर एक सुन्दर स्वर्गदूत था। उसे पूर्ण बनाया गया था। वह एक ऐसा स्वर्गदूत था जो छानेवाले करूब के रूप में परमेश्वर के निकट खड़ा रहता था।

30

लूसीफर का स्वर्ग में बहुत उच्च स्थान था। दया के सिंहासन या परमेश्वर के पवित्र सिंहासन के दोनों ओर दो स्वर्गदूत थे -- एक दाई ओर और दूसरा बाई ओर। लूसीफर उनमें से एक था।

६ - इतना दुःख क्यो?

31

वह स्वंय परमेश्वर के निकट होने पर भी संतुष्ट नहीं था। वह स्वंय परमेश्वर बनना चाहता था। लूसीफर और उसके परमेश्वर के साथ घनिष्ट संबंध के बीच कुछ हो गया। परमेश्वर ने लूसीफर से कहा, □□□

32

(मूलपाठ : यहेजकेल २८:१५)

"जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई "

यहेजकेल २८:१५

33

(मूलपाठ : यहेजकेल २८:१७)

"सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और विभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी..."

यहेजकेल २८:१७

34

यह सुन्दर और सम्मानित स्वर्गदूत स्वार्थी बन गया। उसने केवल परमेश्वर की महिमा और उपासना का लालच किया। वह शक्ति का भूखा था। उसके पास अपने सृष्टिकर्ता को विश्व पर राज करने की चुनौती देने का साहस था। ध्यानपूर्वक सुनिए:

६ - इतना दुःख क्यो?

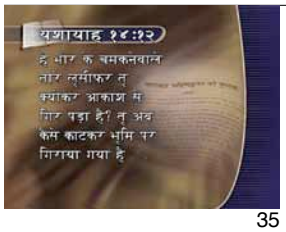

35

(यशायाह १४:१२-१४)

"हे भोर के चमकनेवाले तारे लूसीफर तू क्योंकर आकाश से गिर पड़ा है ! तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है ..."

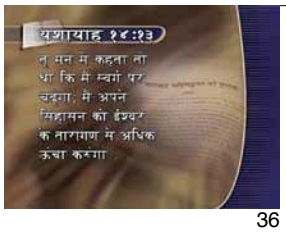

36

तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा...

37

"... मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा।"

यशायाह १४:१२ - १४

38

जैसे ही ये अभिमानी शब्द लूसीफर के होंठों से निकले वैसे ही स्वर्ग का सम्पूर्ण प्रेम और एकता लाखों स्वार्थी टुकड़ों में टूटकर बिखर गई।

39

इसके थोड़े ही समय बाद लूसीफर ने दूसरे स्वर्गदूतों के बीच असंतोष की भावना फैलानी शुरू कर दी थी। धीरे-धीरे किन्तु निश्चित रूप से उसने परमेश्वर के प्रेम और न्याय का अपमान करना आरम्भ किया।

६ - इतना दुःख क्यो?

40

एक पेटी में सड़े हुए फल की तरह, उसका राजद्रोह स्वर्ग में दूसरे स्वर्गदूतों के बीच फैलने लगा।

कदाचित आप यह सोच रहें होंगें कि परमेश्वर ने उसी समय शैतान को नष्ट क्यों नहीं कर दिया।

परमेश्वर यदि चाहता तो लूसीफर और उसके स्वर्गदूतों को जो उसके साथ इस क्रांति में सम्मिलित हो गए थे एक क्षण में नष्ट कर सकता था, परन्तु यदि उसने ऐसा किया होता तो उसके बनाए हुए सारे प्राणी डर कर उसकी सेवा करते।

६ - इतना दुःख क्यो?

41

मान लीजिए कि परमेश्वर हमारे चुनने की स्वतंत्रता को हमसे दूर कर देता और हम सब को रोबोट की तरह बना देता। आप में से कितने ऐसे हैं जिनके पास बच्चे हैं? काफी लोगों के पास हैं। क्या आप एक रोबोट बच्चा चाहेंगे? क्या आप ऐसा बच्चा पसन्द करेंगें जिसका प्रोग्राम आपने आपकी कही गई प्रत्येक बात का पालन करने के लिए निर्धारित कर दिया हो? आप का बच्चा सुबह उठकर कहे, "हां, मां मैं अपने चावल खाऊंगा।" "हां पिताजी, मैं अपना घर साफ करुंगा।" तो आपके पास एक बच्चा नहीं परन्तु एक रोबोट है - एक ठण्ड़ा, लोहे और मशीन का रोबोट। क्या आप इस प्रकार का बच्चा चाहेंगें? कभी नहीं। और न ही परमेश्वर।

42

परमेश्वर प्रेम का परमेश्वर है। वह केवल अपने बनाए गए प्राणियों के साथ एक प्रेमपूर्ण रिश्ते में ही खुश रह सकता है जहां वे उसकी उपासना करते हैं क्योंकि वे उससे प्रेम करते हैं और उस पर विश्वास करते हैं।

६ - इतना दुःख क्यो?

43

शैतान ने परमेश्वर के नियमों और न्याय को चुनौती दी थी, लेकिन परमेश्वर ने इन नियमों को जबरदस्ती यह दिखाने के लिए नहीं बनाया कि वह उनका स्वामी है !

परन्तु उनको इसलिए बनाया जिससे वह उसके बनाए गए प्राणियों की रक्षा कर सके, और उनकी शांति और खुशी को सुनिश्चित कर सकें ।

44

उसके नियम उस लाल बत्ती और गतिवधि करने वाले चिन्हों के समान हैं जोकि हमारी सुरक्षा और अच्छाई के लिए नियोजित किए गए हैं। परन्तु सब स्वर्गदूतों में सबसे अधिक सम्मानित प्राप्त करने वाला यह सोचता था कि उसने अपने आपको बनाने वाले परमेश्वर की अपेक्षा इस विश्व को और अधिक अच्छे ढंग से चला सकता हैं।

45

शैतान ने, "जो परमेश्वर के विपरीत था", अपने आपको एक दुष्टात्मा बना लिया !

६ - इतना दुःख क्यो?

46

(दृश्य)

परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को आज्ञा का पालन करने या न करने की छूट देता हैं। निष्पक्षता और प्यार के कारण, परमेश्वर ने शैतान को इस विश्व के समक्ष यह प्रदर्शित करने की अनुमति दे रखी है कि वह किस प्रकार से इस संसार को चलाएगा। हम नहीं समझ सकते कि यह सब कैसे हुआ जब कि परमेश्वर सब को प्यार करने वाला और सबके लिये अच्छा हैं।

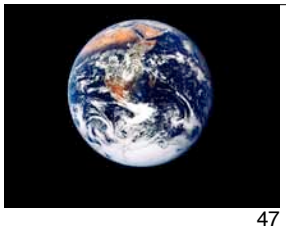
47

स्वर्ग में शुरू होने वाली लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है, उसने केवल जगह बदल ली हैं !

पृथ्वी वह भूमि है जिसके ऊपर अच्छाई और बुराई की महान लड़ाई लड़ी जा रही है।

जहां शैतान यह प्रर्दशन करेगा कि किस प्रकार वह इस संसार को चलाएगा।

48

परन्तु पृथ्वी ही क्यों? हमारे ही ग्रह के साथ ऐसा क्यों है?

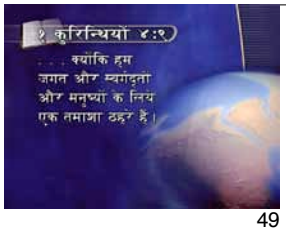

49

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों ४: ९)

"...क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं ?"

१ कुरिन्थियों ४:९

६ - इतना दुःख क्यो?

50

पृथ्वी अभी - अभी सृष्टिकर्त्ता के हाथों से बन कर निकली थी -- अति सुन्दर और पूर्ण। प्रत्यक्ष रूप से शैतान ने भी ऐसा ही सोचा क्योंकि उसने इसे परमेश्वर से छीन लेने योग्य समझा। वह इस कोमल और नवजात ग्रह पर कब्जा करने की योजना बनाएगा।

51

यद्यपि आदम और हव्वा, जो मनुष्य जाति के माता और पिता थे, पूर्ण और सिध्द बनाये गये थे, परन्तु उन्हें बुराई की सम्भावना से दूर नहीं रखा गया था। उन्हें इस बात की छूट दी गई थी कि वे चाहें तो परमेश्वर को प्यार करें अथवा उसके पीछे चलें या फिर चाहें तो उसके नियमों का पालन करने से इन्कार कर दें। परन्तु उनकी वफादारी की परख होनी थी, और परीक्षा केवल एक पेड़ पर केन्द्रित होनी थी।

52

(मूलपाठ : उत्पत्ति २:१६, १७)

"सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है;

६ - इतना दुःख क्यो?

53

पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए, उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

उत्पत्ति २ : १६, १७

यह एक उचित निवेदन जान पड़ा होगा। उन्होंने बहुत हद तक अपने आपको सुरक्षित महसूस किया होगा। परन्तु मनुष्य अत्यधिक क्षतिग्रस्त तब हो जाता है जब वह पूर्णरूप से चौकस ना हो।

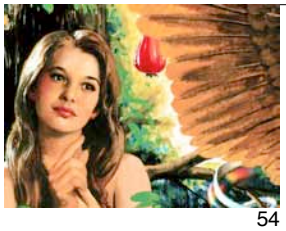
54

हव्वा के साथ ऐसा ही हुआ था।

उसको बहकाने के लिए शैतान ने अपनी अलौकिक शक्ति का प्रयोग किया।

शैतान खुलेआम बहुत कम काम करता है। वह बहुत धोखेबाज है। वह संगठनों, लोगों, या यहां तक कि सांप तक का भी प्रयोग करता है!

55

इसलिए पतरस ने कहा :

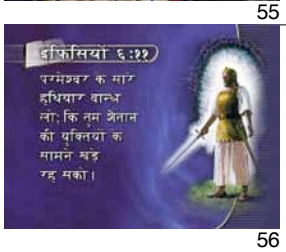

56

(मूलपाठ : इफिसियों ६:११-१२)

"परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।"

६ - इतना दुःख क्यो?

57

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से है,

58

इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।"

इफिसियों ६:११,१२

59

हव्वा को धोखा दिया गया।

उसे इस बात की शंका बिल्कुल नहीं थी कि जो बातें सांप कह रहा है वह शैतान की ओर से आई थी।

वह शैतान, जो सांप के द्वारा बोल रहा था, उसने उससे पूछा,

60

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १)

"....क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना ?"

उत्पत्ति ३: १

61

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : २ - ४)

हव्वा ने उत्तर दिया, "इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं;

62

पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है उसके फल के विषय में,

६ - इतना दुःख क्यो?

63

परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।

64

तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे।"

उत्पत्ति ३ : २ - ४

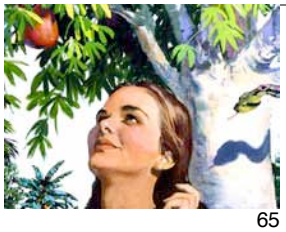
65

जब हव्वा ने साँप की बातें सुनी, तब उसके मस्तिष्क में यह बात अवश्य ही आई होगी कि यह जो कुछ कह रहा है वह परमेश्वर की बातों के एकदम विपरीत है। कदाचित यह देखते हुए कि वह असमजंस में पड़ गई है, साँप ने तुरन्त कहा,

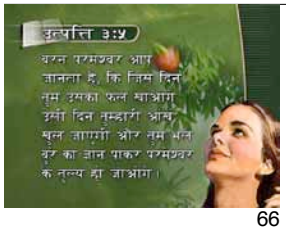

66

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ५)

"वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।"

उत्पत्ति ३ : ५

६ - इतना दुःख क्यो?

67

शैतान ने यह सुझाव दिया कि परमेश्वर अन्यायी है, और वह कुछ अच्छी बातें छुपा रहा है।
परमेश्वर के तुल्य बनना उसकी हार्दिक अभिलाषा थी और यही उसके गिरने का कारण था।
अब यह बात हव्वा को भी अच्छी लगने लगी और शीघ्र ही उसी क्षण वह बहक गई।

68

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ६)
"सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा है और देखने में मनभाऊ,

69

और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया..."
उत्पत्ति ३ : ६

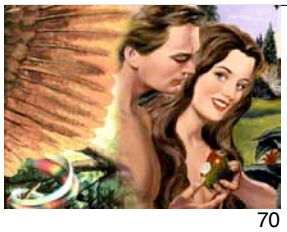
70

और हव्वा ने आदम को वह फल दिया, और उसने उसको खाया।

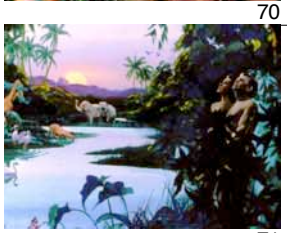
71

आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रेम और ईमानदारी की परीक्षा में असफल हो गए, और कुछ समय के बाद ही वे यह जान गए कि कुछ गलत हुआ है।

६ - इतना दुःख क्यो?

72

शैतान ने नवजात संसार का अपहरण कर लिया। और उसी क्षण से, उसने अपने आपको इस शीर्षक से संबोधित किया कि वह, "दुनिया का राजकुमार है।" इस राजद्रोह से उसने अपने आपको इस ग्रह का शासक बनाया !

आदम और हव्वा ने शैतान की बातों को सुना था।

73

और जब यह अत्यन्त शोकपूर्ण दिन बीत गया, तब हमेशा की तरह संध्या के समय में परमेश्वर आया, और उसने आदम और हव्वा को पुकारा। अब तक, यह दिन का सबसे खुशी का समय होता था जब उन्हें परमेश्वर के साथ चलने का और प्रत्यक्ष बातें करने का मौका मिलता था। परन्तु इस दिन वे भाग गए और अपने आप को झाड़ियों में छुपा लिया!

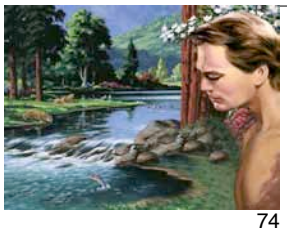
74

अन्त में, आदम धीरे से वाटिका की झाड़ियों के पीछे से बाहर आया और उसने प्रायश्चित किया,

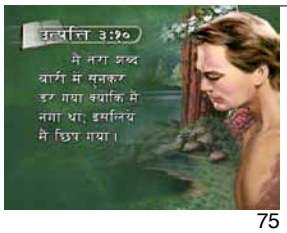

75

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १०)

"...मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये मैं छिप गया।"

उत्पत्ति ३ : १०

६ - इतना दुःख क्यो?

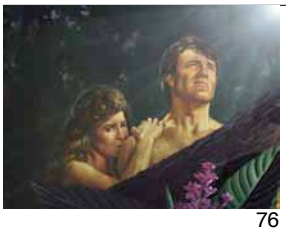

76

इससे पहले आदम कभी भी नहीं डरा था, परन्तु ये पाप ने करवाया।

यहां तक कि यह एक व्यक्ति के दिल में परमेश्वर के लिए डर पैदा करता है।

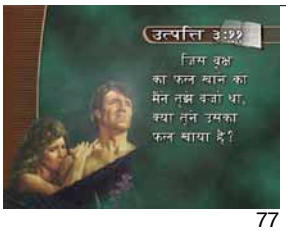

77

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ११)

परमेश्वर ने कहा, "...जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है ?"

अध्याय ११

आदम ने उत्तर दिया:

78

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १२)

"...जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है उसी स्त्री ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया।"

उत्पत्ति ३ : १२

कुछ घण्टे पहले, आदम हव्वा के साथ मरने के लिए तैयार हो गया था।

अब उसने उस पर दोष लगाया, और परमेश्वर पर भी दोष लगाया कि उसने उस स्त्री को बनाया है। किस प्रकार पाप एक पवित्र प्रेम के टुकड़े कर देता हैं!

६ - इतना दुःख क्यो?

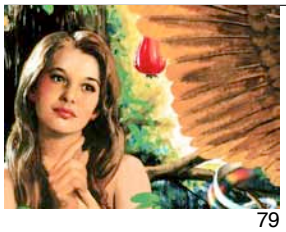
79

परन्तु हव्वा दोष लगाने में कुछ कम नहीं थी। जब परमेश्वर ने उससे पूछा कि उसने क्या किया, तो उसका उत्तर यह था,

80

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १३)

".....सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया।"

उत्पत्ति ३ : १३

हव्वा ने भी परमेश्वर पर दोष लगाया। दूसरे शब्दों में, वह यह कह रही थी, "सांप ने जिसे तूने बनाया था उसने मुझे मुसीबत में डाला।"

81

उसी दिन आदम और हव्वा मृत्यु के लिए दंडित हो गए थे!

जीवन के वृक्ष का फल न खा लें इसलिए परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उस बगीचे से निकाल दिया जो उनका घर था।

शैतान ने कहा कि वे कभी नहीं मरेंगे, परन्तु बाइबिल यह कहती है कि,

६ - इतना दुःख क्यो?

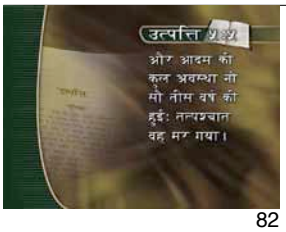

82

(मूलपाठ : उत्पत्ति ५ : ५)

"और आदम की कुल अवस्था नौ सौ तीस वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया।"

उत्पत्ति ५ : ५

बहुत देर के बाद, उन्हें यह मालूम हुआ कि वह शैतान

83

(मूलपाठ : यूहन्ना ८:४४)

यूहन्ना ८:४४

"...झूठा है वरन झूठ का पिता है।"

यूहन्ना ८:४४

84

संसार के दुःख और बरबादी के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराना आसान है, परन्तु शैतान ही वास्तव में इस विनाश के लिए जिम्मेदार है।

85

(दृश्य)

वही है जो इस ग्रह पर मुसीबत लाया और सर्वदा से वही पाप और दुःख का कारण है। यीशु ने शैतान के चेहरे से और उसके दुख पहुँचाने के उपायों पर से मुखौटा उतार दिया।

६ - इतना दुःख क्यो?

86

सब्त के दिन जब वह सभा में उपदेश दे रहा था, तब उसने देखा कि एक स्त्री जो लंगड़ी थी उसके सामने झुकी।

उसकी दुःख भरी परिस्थितियों से प्रभावित होकर, यीशु ने उसे ठीक कर दिया।

87

अधिकारीगणों ने तुरन्त उसकी आलोचना की क्योंकि उसने सब्त के दिन उसे ठीक कर दिया था जोकि परमेश्वर की उपासना का पवित्र दिन है। परन्तु देखिए उसने अपने कार्यो का बचाव कैसे किया:

88

(मूलपाठ : लूका १३ : १६)

"और क्या उचित न था, कि यह स्त्री जो इब्राहिम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था,

89

सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?"

(लूका १३ : १६)

90

यीशु ने कहा कि शैतान ने इस स्त्री को अठारह वर्षो से अपने कब्जे में कर रखा था।

केवल शैतान ही इसका दोषी है!

वास्तव में, शैतान ही सभी बीमारी, दुःख, निराशा, और मृत्यु के पीछे की पापपूर्ण शक्ति है !

६ - इतना दुःख क्यो?

91

शैतान और परमेश्वर के बीच में होने वाले वाद-विवाद और शैतान की रणकौशल का अत्यधिक स्पष्ट और विस्तारपूर्वक वर्णन बाइबिल में केवल अय्यूब के प्रथम अध्याय की अपेक्षा और कहीं देखने को नहीं मिलेगा।

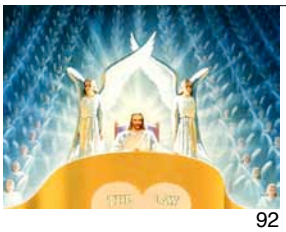
92

शैतान के गिराए जाने के कुछ समय के बाद परमेश्वर के पुत्रों ने अपने आप को उसके समक्ष पेश किया। शैतान भी आया।

इस विषय में सोचिए!

"परमेश्वर के पुत्रों" की एक सभा थी, और शैतान वहाँ बिना बुलाए आया था!

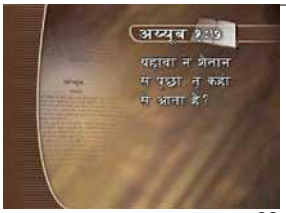

93

(मूलपाठ : अय्यूब १:७)

"यहोवा ने शैतान से पूछा, तू कहां से आता है ?"

(अय्यूब १:७)

दूसरे शब्दों में, तुम्हें किसने बुलाया? तुम्हें यहां आने का क्या अधिकार है? शैतान ने प्रभु को यह उत्तर दिया,

६ - इतना दुःख क्यो?

94

"..... पृथ्वी पर इधर - उधर घूमते - फिरते और डोलते - डालते आया हूँ।"

(अय्यूब १: ७)

शैतान ने पृथ्वी पर राज करने का दावा किया और उसने आदम का स्थान लिया !

95

आदम को "परमेश्वर का पुत्र" कहा गया (लूका ३:३८ देखिए), बिल्कुल उन लोगों की तरह जो उस दिन परमेश्वर से मिलने आए थे।

96

जिस प्रकार वास्तव में आदम हमारे संसार का मुखिया था, क्या उसी प्रकार वे भी दूसरे संसारों के मुखिया थे? शैतान का पृथ्वी को प्रतिनिधित्व करने का दावा करने पर प्रभु ने शैतान से कहा:

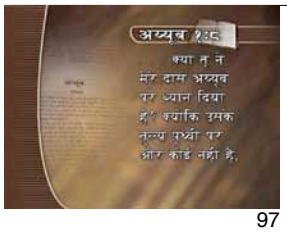

97

(मूलपाठ : अय्यूब १:८,९, ११)

"...क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है?, क्योंकि उसके तुल्य पृथ्वी पर और कोई नहीं है,

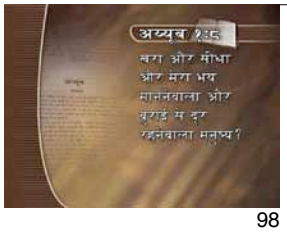

98

खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य?"

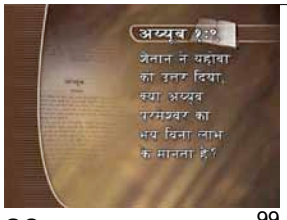

99

शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है?

६ - इतना दुःख क्यो?

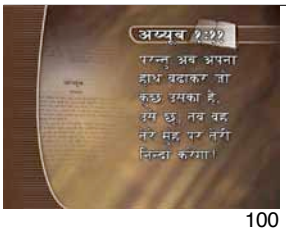

100

परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा! "

अय्यूब १ : ८ ,९, ११

101

कैसी चुनौती है!

शैतान ने यह दावा किया कि अय्यूब परमेश्वर के प्रति वफादार केवल इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत कुछ दिया था और इसलिए नहीं कि वह परमेश्वर को प्यार करता था और उस पर विश्वास करता था।

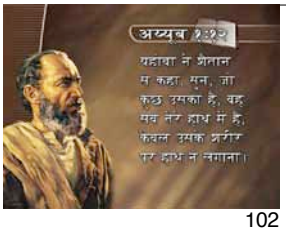

102

(मूलपाठ : अय्यूब १:१२)

"यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है, केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।'

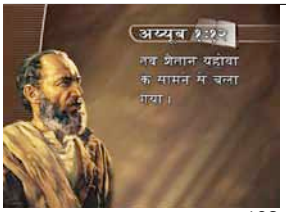

103

तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।" अय्यूब १:१२

शैतान चला गया, वह अय्यूब की सम्पत्ति को नष्ट करने के लिये उत्सुक था।

६ - इतना दुःख क्यो?

104

विपत्तियाँ शीघ्र आरम्भ हुई :

पहली: शबा के लोगों ने अय्यूब के जानवरों को चुरा लिया और उसके सेवकों को मार डाला।

105

दूसरी: आकाश से बिजली गिरी और उससे उसकी भेड़ें और उसके गड़रिए जल कर भस्म हो गए।

106

तीसरी: कसदी लोग वहाँ आए और अय्यूब के ऊँटों को लूटकर ले गए।

107

चौथी: (अत्यन्त दिल दहला देने वाला समाचार): तभी बवंडर आया और अय्यूब के ज्येष्ठ पुत्र के घर को उसने नष्ट कर दिया। वहाँ खाना - पीना चल रहा था और अय्यूब के दसों बच्चे मर गए !

108

बेचारा अय्यूब!

उसने सोचा कि प्रभु ने उसकी सम्पत्ति उससे ले ली है और उसके हार्दिक दुःख का कारण वही है।

वह यह नहीं समझ पाया कि ये सब शैतान ने किया है!

तब हालांकि उसने अपने दुःखों से निदान पा लिया, लेकिन अय्यूब ने परमेश्वर के प्रति वफादारी नहीं बदली।

६ - इतना दुःख क्यो?

109

(मूलपाठ : अय्यूब १ : २१)

उसने कहा;"...यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने ले लिया; यहोवा का नाम धन्य है।"

अय्यूब १ : २१

हालांकि वह उन विपत्तियों को नहीं समझ सका जिसने उसकी सम्पत्ति और उसके बच्चों को बरबाद कर दिया था, तब भी अय्यूब पहले की ही तरह परमेश्वर की अच्छाइयों पर विश्वास करता था। परन्तु शैतान का कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ था। उसने परमेश्वर को फिर से चुनौती दी, यह कहते हुए,

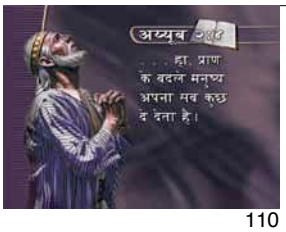

110

(मूलपाठ : अय्यूब २ : ४ - ६)

"..... हां, प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है।

111

सो केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियाँ और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।"

112

और यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।"

अय्यूब २ : ४ - ६

६ - इतना दुःख क्यो?

113

परीक्षा जारी थी!

अय्यूब जिसका जीवन दुःखों से भर गया था, क्या परमेश्वर के प्रति अब भी वफादार रहेगा, या वह परमेश्वर के विरुद्ध हो जाएगा?

114

(मूलपाठ : अय्यूब २:७)

"तब शैतान यहोवा के सामने से निकल गया,

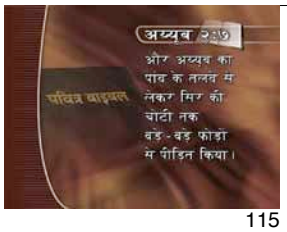

115

और अय्यूब को पांव के तलवे से लेकर सिर की चोटी तक बड़े - बड़े फोड़ों से पीड़ित किया।" अय्यूब २ : ७

116

यदि आप के शरीर में कभी एक फोड़ा भी निकल जाए, तो आप को मालूम है कि एक ही फोड़ा कितना दुःखदायी हो सकता है।

कल्पना कीजिए कि यदि वह आपके सिर से पांव तक भर जाए तो क्या होगा!

117

यहाँ तक कि शैतान ने अय्यूब से उसकी धन सम्पत्ति, उसके बच्चे और उसका स्वास्थ्य, उससे छीन लिया, फिर भी अय्यूब परमेश्वर के प्रति वफादार रहा।

किस प्रकार का आदमी था वह !

बाइबिल कहती है,

६ - इतना दुःख क्यो?

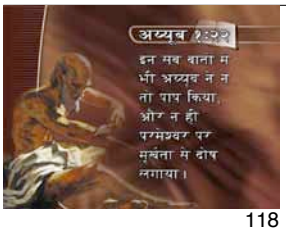

118

"इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न ही परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।"

अय्यूब १ : २२

119

अय्यूब को किसने चोट पहुँचाई?

वह कौन था जिसके कारण अय्यूब पर विपत्ति आई?

शैतान!

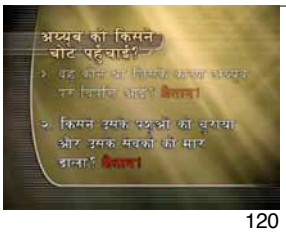

120

किसने उसके पशुओं को चुराया और उसके सेवकों को मार डाला? शैतान!

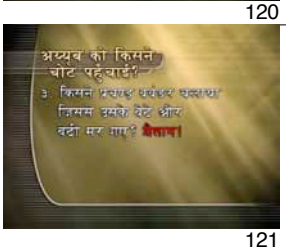

121

किसने प्रचण्ड बवंडर चलाया जिससे उसके बेटे और बेटी मर गए?

शैतान!

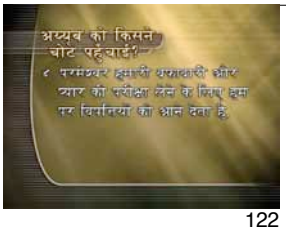

122

परमेश्वर हमारी वफादारी और प्यार की परीक्षा लेने के लिए हम पर विपत्तियों को आने देता है,

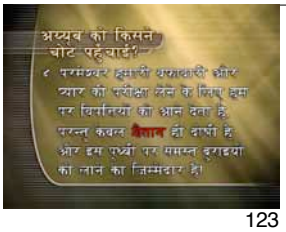

123

परन्तु केवल शैतान ही दोषी है और इस पृथ्वी पर समस्त बुराइयों को लाने का जिम्मेदार है!

६ - इतना दुःख क्यो?

124

हम सब व्याकुल करने वाले एक अधिकार और अवैधानिकता के सघंर्ष के बीच फंसे हुए हैं - एक ऐसी लड़ाई जो सृष्टिकर्ता और विद्रोही शैतान के बीच चल रही है। हम दर्शक नहीं है; हम भी उसके पात्र हैं, चाहे हम यह पसन्द करें या न करें।

125

शैतान को केवल एक कल्पना या एक प्रभाव मात्र समझना उस बुद्धिमान शक्ति के हमलों के सामने अपने आपको असुरक्षित छोड़ देना है।

126

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कहती है:

127

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : १२)

"इस कारण, हे स्वर्गो, और उनमें के रहने वालों मगन हो!

हे पृथ्वी, और समुद्र तुम पर हाय!

128

क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है।"

प्रकाशितवाक्य १२ : १२

पतरस ने इस चुनौती को लिखा :

६ - इतना दुःख क्यो?

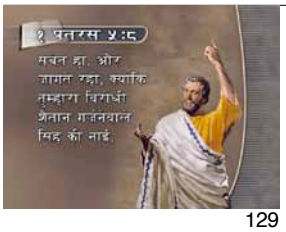

129

(मूलपाठ : १ पतरस ५ : ८)

"सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई,

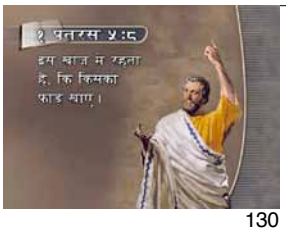

130

इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए।"

१ पतरस ५ : ८

131

परन्तु इतना होने पर भी शैतान हमेशा बुरा ही करता है, सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के पास सृष्टि के पुनः निर्माण की योजना है, जिसमें उसका प्रिय पुत्र सम्मिलित है जो हमारे पाप के कारण मरने के लिए तैयार हो गया ताकि हमें अनन्त जीवन मिल सके।

132

बाइबिल कहती है कि शैतान एक दहाड़ने वाले सिंह की तरह आता है।

133

शैतान ने राजा हेरोदस के द्वारा बालक यीशु को मारना चाहा। (वह हार गया)

134

(दृश्य)

शैतान स्वर्ग से स्वर्गदूत का नकाब पहनकर, तीन महान परीक्षाओं के साथ जंगल में यीशु के पास आया। (वह हार गया)

६ - इतना दुःख क्यो?

135

शैतान ने कलवरी पर यीशु को नाश करने के लिए भीड़ को भड़काया (वह सदा के लिये एक हारा हुआ शत्रु था)

136

यद्यपि एक कलवरी थी, पर एक पुनरूत्थान भी था! परमेश्वर की महिमा हो। यह परमेश्वर था जिसने अपना पुत्र दे दिया; और पुत्र ने अपने आपको, ताकि आपके और मेरे भाग्य बदल सके। वह विजय की घड़ी थी, और पृथ्वी पर शैतान के कैदियों को स्वतंत्र कराने का दिन था।

137

उस दिन शैतान एक हारा हुआ शत्रु हो गया। मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा सभी बुराईयों और दुःखों का नाश करने का अधिकार प्राप्त कर लिया।

इब्रानियों २ : १४:

138

(मूलपाठ : इब्रानियों २:१४)

"इसलिये जबकि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह अपने आप ही उनके समान उनका सहभागी हो गया,

139

ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे।"

६ - इतना दुःख क्यो?

140

शैतान ने विश्व के सभी विद्धानों के समक्ष यह प्रदर्शित करके दिखा दिया कि उसका स्वभाव किस प्रकार का है। और वह अभी भी यह दिखा रहा है कि वह दुनिया पर किस रीति से शासन करना चाहता है।
बवंडर, भूकम्प, बाढ़ें, बीमारी, निराशा और दर्द!
ये सब हम देखते हैं।

141

परन्तु इन सब के पीछे शैतान का अनदेखा अलौकिक कार्य है।

142

ये दुःख "परमेश्वर के कार्य नहीं हैं " - ये "शैतान के कार्य हैं।"

143

आप, दुःख, निराशा, और अपने जीवन की परेशानियों के विषय में सोच रहे होंगे।
आप अपने खोए हुए बच्चे या प्रेमी जन के विषय में सोच रहे होंगे, और पूछ रहे होंगे कि, "परमेश्वर कहाँ है?"

144

बाइबिल यह सिखाती है कि परमेश्वर है। वह आपके हृदय की पीड़ा, दुःख, और कठिनाईयों के बीच है।
और पाप व दर्द को दूर करने के लिए वह शीघ्र आने वाला है।

६ - इतना दुःख क्यो?

145

अच्छा समाचार यह है कि इस सुन्दर ग्रह को, जिसे शैतान ने बन्दी बना लिया था, अब जल्दी ही छुड़ा लिया जाएगा। इस ज्ञान से इस भटके हुए ग्रह के चिन्तित और परेशान यात्रियों को शान्ति मिलनी चाहिए। परमेश्वर के पास धोखेबाज शैतान को नाश करने की एक योजना है, और हम इस योजना के विषय में आने वाली सभाओं में अध्ययन करेंगे। आइए देखे कि बाईबिल शैतान के बारे में क्या कहती है:

146

(मूलपाठ : यहेजकेल २८:१६, १८)

"...हे छानेवाले करूब मैं ने तुझे नाश किया है..."

147

सो मैंने तुझ में से ऐसी आग उत्पन की

148

जिससे तू भस्म हुआ, और मैंने तुझे...भूमि पर भस्म कर डाला है..."

यहेजकेल २८:१८

पाप और दुःख सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

149

हां, दोस्तो, यीशु जल्दी ही आ रहे हैं!
एक तुच्छ गलीली की तरह नहीं, एक अपमानित व्यति के तरह नहीं जिसपर थूका गया था और जिसका बहिष्कार किया गया था। उसकी तरह नहीं जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था,

150

परन्तु राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की तरह जिसके पास राज करने का अधिकार है। हमें उनसे मिलने के लिए तैयार हो जाना चाहिए, यदि हम ऐसा नहीं करेंगे, तो हम सब कुछ खो देंगे!

151

(दृश्य)
आज प्रश्न यह उठता है कि हमें किस पर विश्वास करना चाहिए ?
हमें किसके पीछे चलना चाहिए?
एक प्रेम करने वाले परमेश्वर के? या एक गिराए गए स्वर्गदूत के?
सीमा रेखाएँ खींची जा चुकी हैं; पूरे संसार को दो भागों में बांटा जा रहा है।
आप की वफादारी कहाँ है?
आप किसका साथ देंगे हैं?

६ - इतना दुःख क्यो?

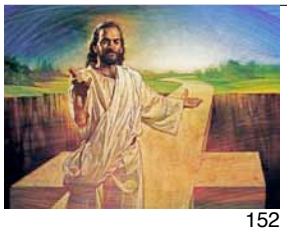
152

प्रत्येक बेचैन, अकेले हृदय को, प्रत्येक दर्द से भरे पापी आत्मा को, इस ग्रह पर युद्ध में सम्मिलित उसके सभी बच्चों को, यीशु प्यार भरा निमंत्रण देते हैं:

153

(मूलपाठ मत्ती: ११:२८)

"हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।"

मत्ती: ११:२८

154

(मूलपाठ : यूहन्ना ६:३७)

"...जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।"

यूहन्ना ६:३७

क्या यह आनन्द का समाचार नहीं है?

६ - इतना दुःख क्यो?

155

यीशु जीवन की परेशानियों, दुःखों, टूटे हृदय और विफलता के बीच हैं।

वे आप के दुःखों को जिसे आप सह रहे हैं, समझते हैं।

उन्हें पता है कि कैसा अनुभव होता है जब आपका शरीर बीमारियों से बर्बाद हो रहा हो।

उन्होंने उस दर्द को सहा था जब क्रूर लोग उनके हाथों में कीले ठोक रहे थे।

वह अकेलेपन को भी जानता है। उसने उसे महसूस किया था जब वह अधेंरे में क्रूस पर अकेला चढ़ा था।

वह गरीबी जानते हैं जिसका अनुभव उन्हें फिलिस्तीन की सड़कों पर कम खाकर और बिना घर के रहने पर हुआ था।

आज उनके पास आइए। वे आपको नई आशा और प्रोत्साहन देंगे। यह सबसे अच्छी खबर है। जल्दी ही एक दिन यीशु फिर से आयेंगे और हमारे जीवन के दुःखों का अन्त कर देंगे। वे दोबारा हमें एक नई दुनिया देने आयेंगे।

पाप और पापियों का नाश हो जाएगा। शैतान भी अन्त में पूरी तरह से हार जाएगा।

यीशु की यह इच्छा है कि वे आपको परमेश्वर के

६ - इतना दुःख क्यो?

परिवार में शामिल कर लें, और उस नए बनाए ग्रह पर आपको अमरत्व का वरदान दें। परन्तु आपको यह निर्णय करना अनिवार्य है कि आपका प्रभु और स्वामी कौन होगा?

दोस्तो, यह निर्णय आपके जीवन और मृत्यु का मामला है!

क्या आप नहीं चाहेंगे कि सही का चुनाव करते हुए मसीह को अपना राजा मानें।

वे प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनकी बाहें खुली हुई हैं। वे कह रहे हैं, "आओ! आओ! आओ!

प्रार्थना में अपने सिरों को झुकाकर क्या आप यह कहेगें, "हाँ, प्रभु यीशु, मैं आ रहा हूँ?"